किताबों पर बातचीत

कमलेश चन्द्र जोशी

शुरुआती कक्षाओं में पढ़ना सिखाने की प्रकिया में बच्चों से पाठ्येतर किताबों की विषयवस्तु पर बातचीत करना व उनके अनुभवों को शामिल करने के अवसर बनाना बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस लेख में लेखक ने बच्चों के साथ किए अपने काम को, अनुभवों व सवालों के उदाहरणों के साथ रखा है। साथ ही सुझाया है कि बच्चों से किताबों पर बातचीत कैसे की जाए, कैसे उनके अनुभवों को शामिल करते हुए बातचीत का विस्तार किया जाए। बच्चों को पाठक के रूप में विकसित करने के लिए लेख शुरुआती कक्षाओं में ही उन्हें नियमित रूप से रुचिपूर्ण किताबें पढ़ने को देने की बात करता है। सं.

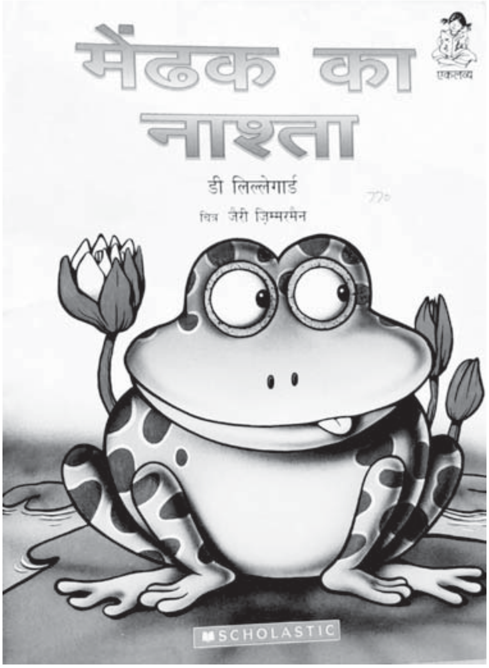
स्कूल पहुँचे तो भंडारी मैडम कहने लगीं कि जो किताबें आपसे मँगवाई थीं उन्हें बच्चे ख़ूब पढ़ते हैं और किताबें उन्हें अच्छी लगती हैं। उन्होंने आगे कहा कि कक्षा 2 का एक बच्चा तो जोड़-जोड़ कर पढ़ने की कोशिश भी करता है और उसके पढ़ने में सुधार हो रहा है। पहले उसे पढ़ना नहीं आता था। उनकी यह बात सुनकर अच्छा लगा कि शायद वे बच्चों के पढ़ना सीखने में किताबों के महत्त्व को समझ रही हैं। शिक्षकों में यह विश्वास पैदा करना थोड़ा मुश्किल ही रहता है कि बच्चे पढ़कर ही पढ़ना सीखते हैं। उनकी यह समझ रहती है कि पढ़ना ईंट पर ईंट रखने की प्रक्रिया है जो वर्णों की पहचान से शुरू होती है और अन्त में पाठ्यपुस्तक के पाठ पढ़ने तक जाती है। ऐसे ही वे पढ़ना सीखते हैं। कुछ देर में ही मैडम बच्चों की कुछ किताबें लेकर आ गईं और कक्षा की तरफ़ जाने लगीं। कक्षा में पहली-दूसरी के बीस-बाईस बच्चे बैठे हुए थे। एक शिक्षिका ब्लैकबोर्ड पर शब्दों को लिखने का काम करवा रही थीं और बच्चे उतार रहे थे। उन्हीं में से एक बच्चे को उन्होंने *बरखा* सीरीज़ की एक किताब *फूली रोटी* दी और वह हमें पढ़कर सुनाने लगा। यह वही बच्चा था जिसके बारे में वे बात कर रही थीं। अभी वह धीरे-धीरे पढ़कर सुना रहा था। कुछ महीनों में वह सीख जाएगा। यह सब दिखाकर मैडम को सन्तोष हुआ कि वह कुछ ठीक कर रही हैं। मैंने आगे कहा कि किताबों को नियमित रूप से पढ़ने के मौक़े देने से बच्चे पढ़ना सीखते हैं। इस काम में हमें उनकी मदद करनी चाहिए।

इतने में मैंने देखा, एक टाटपट्टी पर कुछ बच्चे चुपचाप बैठे हुए थे। ऐसा लगा उनके पास कोई काम नहीं है। मैंने सोचा कि मैडम से एक किताब लेकर इन बच्चों को पढ़कर सुनाई जाए। मैंने उन सातों बच्चों को एक घेरे में बैठाया।



उनके नाम पूछे और बातें करने लगा। उन बच्चों में पाँच बच्चे पहली कक्षा के थे और दो दूसरी के। फिर उन्हें किताब दिखाना शुरू किया। बच्चों से बात शुरू हुई कि इस किताब में क्या बना हुआ है? बच्चों ने बताया– मेंढक। आगे पूछा– तुम लोगों ने मेंढक कहाँ-कहाँ देखा है? एक बच्ची ने कहा– झनकट में। कुछ और ने भी झनकट ही बताया। शायद वे एकाएक जवाब के लिए तैयार नहीं थे। झनकट उनके स्कूल के पास सड़क से जुड़ा एक दूसरा गाँव है जहाँ बाज़ार, दुकानें आदि हैं। वे उसका नाम ले रहे थे। फिर एक बच्चे ने कहा– नदी में। तब सबसे पूछा गया कि ये तो कह रहे हैं नदी में, और तुम लोग कह रहे हो झनकट में। बताओ, मेंढक कहाँ-कहाँ रहता है? एक बच्चे ने कहा– नाल्ला में। उनसे आगे बात हुई कि मेंढक नदी, तालाब, नाले आदि जगहों पर रहता है। कभी-कभी ज़मीन पर भी दिखाई पड़ जाता है। बात आगे बढ़ी कि मेंढक कितना बड़ा होता है? बच्चों ने हाथ से बताया– इतना बड़ा। फिर पूछा, किस रंग का होता है? एक बच्चे ने कहा– काला होता है, दूसरे ने कहा– पीला, तीसरा बोला– हरा होता है। इसके बाद पूछा गया, किताब में किस रंग का बना हुआ है? जवाब आया– हरे रंग का।

आगे फिर बात शुरू हुई कि मेंढक क्या-क्या खाता है? इससे पहले यह बताओ तुम लोग क्या खाते हो? एक बच्चे ने कहा– खाना खाते हैं। एक बच्चे की ओर इशारा करके पूछा, तुम क्या खाते हो? बच्चा बोला– भात-दाल खाते हैं। और क्या खाते हो? तो बोला– रोटी खाते हैं। एक बच्चे ने कहा– मच्छी-मुर्ग़ा भी खाते हैं। एक ने बताया– आलू खाते हैं। अच्छा, अब बताओ मेंढक क्या खाता होगा? वह भी भात-दाल-रोटी खाता है या कुछ और? बच्चे थोड़ी देर सोच में पड़ गए। फिर एक बच्चे ने कहा– कीड़ा खाता है। ये ठीक कह रहे हैं। मेंढक कीड़ा खाता है। अच्छा, हम यह देखें कि चित्र में मेंढक किस चीज़ के बारे में सोच रहा है? इसके बाद थोड़ी देर शान्ति छाई रही।



उनसे फिर बात हुई कि हो सकता है कहीं घूमने जाने की सोच रहा हो या कुछ खाने की सोच रहा हो या कुछ खेलने की सोच रहा हो। एक बच्ची ने कहा– कुछ खाने की सोच रहा है। चलो, आगे देखते हैं मेंढक क्या सोच रहा है? अच्छा, इस किताब का कोई नाम तो होगा। यह कहाँ पर लिखा हुआ है? उँगली रखते हुए, किताब का नाम यहाँ पर भी लिखा हुआ है। किताब का नाम है– *मेंढक का नाश्ता।* किताब के अन्दर यहाँ पर भी लिखा हुआ है। अब इसको पढ़ते हैं। इस बीच एक शिक्षिका वहाँ आ गईं और बैठकर इस प्रक्रिया को देखने लगीं।

चित्र दिखाते हुए पूछा, इस चित्र में क्या-क्या बना हुआ है? बच्चों ने कहा– मेंढक। अच्छा, मेंढक क्या कर रहा है? मेंढक बैठा हुआ है। मेंढक कहाँ बैठा हुआ है? एक बड़े पत्ते पर। यह किस चीज़ का पत्ता हो सकता है, इसपर सोचना पड़ेगा। तुम लोगों ने देखा है यह पत्ता। बच्चों के बीच चुप्पी। चलो, अब पढ़कर देखते हैं, शायद इसमें लिखा हुआ हो। किताब में दिखाते हुए। यहाँ पर लिखा हुआ है– तालाब के बीचों-बीच कमल के पत्ते पर

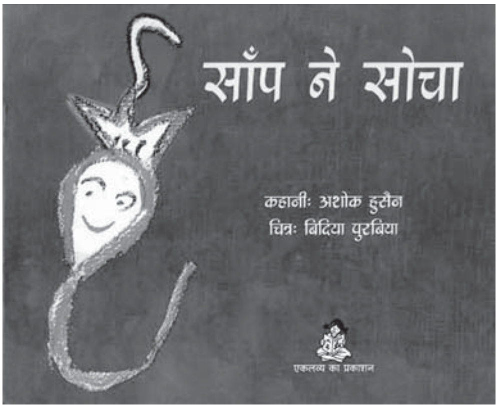
मेंढक बैठा हुआ था। 'नाश्ते का समय हो गया है', मेंढक बोला। तो पत्ता किसका है– कमल का। अगला पन्ना पलटते हुए। अब इन चित्रों पर क्या-क्या बना हुआ है? एक बच्चा– पेड़ है। दूसरी बच्ची– मछली। तीसरा– पानी है। एक और बच्ची– फूल है। चित्र में यह क्या चीज़ दिख रही है? एक बच्चा– कीड़ा। चलो, पढ़कर देखते हैं। यहाँ क्या लिखा हुआ है? एक मक्खी उड़ती हुई वहाँ पहुँची। तो क्या चीज़ है– मक्खी। अगली लाइन में क्या लिखा है? 'हम्म, लो आ गया नाश्ता', मेंढक ने सोचा। चलो आगे पन्ने में देखते हैं। इस चित्र में आगे क्या दिखाई पड़ रहा है? ये क्या है– मक्खी। इतनी बड़ी मक्खी दिख रही है।

यहाँ लिखा है– मक्खी गुन गुन करती हुई इधर-उधर उड़ रही थी। अपने कमल के पत्ते पर, तालाब के बीच मेंढक चुपचाप बैठा रहा। पन्ना पलटते हुए। अब क्या है– मक्खी। इसके साथ ही मेंढक की इतनी बड़ी आँखें। मेंढक ध्यान से देख रहा है। अब क्या लिखा है? गुनगुनाती मक्खी कई बार उसके पास से गुज़री। अगले पन्ने पर कितनी बड़ी मक्खी दिखाई दे रही है। यहाँ क्या लिखा है? 'गुन गुन', मक्खी ने कहा। अब इस चित्र में क्या हो रहा है? मेंढक कैसे बैठा है? क्या सोच रहा है? चुपके से बैठा हुआ है। यहाँ लिखा हुआ है– मेंढक बिना हिले, बिलकुल चुपचाप बैठा रहा। अगले पन्ने पर मेंढक मक्खी को ध्यान से देख रहा है। तालाब है। बड़े-बड़े पत्ते हैं। यहाँ लिखा है– 'गुन गुन', मक्खी ने कहा। इस चित्र में क्या दिख रहा है? मेंढक के पास मक्खी आ गई। यहाँ पर क्या लिखा हुआ है? मेंढक की आँखें फैल गईं। मक्खी गुनगुनाती हुई मेंढक के पास, और पास आ गई। अब क्या होगा? एक बच्ची– मेंढक मक्खी को पकड़ने की सोच रहा है। कैसे पकड़ेगा? बच्चों की चुप्पी। चलो देखते हैं। क्या दिख रहा है? अरे, मेंढक की जीभ कितनी लम्बी हो गई। और लिखा है– पटाक्। अब इस पन्ने पर लिखा हुआ है– मेंढक ने अपनी जीभ से मक्खी को पकड़ लिया। फिर क्या हुआ? बच्चे चुप रहे। कुछ देर बाद एक बच्चा बोला– मेंढक मक्खी को खा गया। यहाँ पर लिखा है– 'म् म् म्', मेंढक ने कहा। 'कितना अच्छा नाश्ता था!' इस प्रकार मेंढक ने नाश्ता कर लिया। तुम लोग भी नाश्ता करके स्कूल आते होगे। बच्चे चुप रहे। तो यह किताब पूरी हो गई।

चलो, अब दूसरी किताब देखते हैं। इसमें क्या बना हुआ है? एक बच्चे ने कहा– साँप।



और क्या-क्या दिख रहा है? तुममें से साँप किस-किस ने देखा है? एक बच्चे ने कहा– देखा है। कहाँ पर देखा है? नदी में। और किसी ने देखा है साँप? बच्चों की तरफ़ से कोई आवाज़ नहीं आई। साँप छोटा होता है या बड़ा? एक ने कहा– बड़ा होता है। दूसरे ने कहा– लम्बा होता है। उनसे आगे बात हुई कि वह किस रंग का होता है। एक ने कहा– काला होता है, दूसरे ने हरा कहा तो तीसरे ने पीला। अच्छा, अब इस किताब का नाम पढ़ते हैं। किताब का नाम लिखा है– *साँप ने सोचा।* अब तुम बताओ, इस चित्र में बना साँप क्या सोच रहा होगा? आगे किताब



पढ़ते हैं। किताब में लिखा है– साँप इधर-उधर घूमने निकला। तुम लोग भी घूमने जाते हो? कहाँ-कहाँ घूमने जाते हो? बच्चों ने कहा– हम झनकट जाते हैं, दुकान पर जाते हैं, खेत जाते हैं। और कहाँ जाते हो? बाज़ार जाते हैं। और कहीं मेला भी जाते हो? बच्चों की तरफ़ से कोई आवाज़ नहीं आई। तो यह साँप भी घूमने जा रहा है। देखो, इस चित्र में क्या बना हुआ है? बच्चों ने कहा– घर, पेड़, चारपाई। किताब में देखो, साँप कहाँ-कहाँ घूम रहा है? यहाँ लिखा हुआ है– घास पर। चित्र में घास कहाँ बनी हुई है? और क्या बना हुआ है? फूल-पेड़ बने हैं? पेड़ पर क्या बना हुआ है? पेड़ पर कौन-सी चिड़िया है? एक बच्चे ने कहा– कौवा है, दूसरे ने कहा– तोता है, तीसरे ने कहा– मुर्ग़ा है। चलो, कोई चिड़िया हो सकती है। फिर आगे लिखा है कि साँप कहाँ घूमने गया, पानी में। फिर कहाँ गया होगा? ये लिखा है– झाड़ी में। फिर कहाँ गया– पेड़ पर। पेड़ पर कहाँ लिखा है। एक बच्ची ने इशारा करके बताया– यहाँ पर लिखा है। अब सोचो, साँप कहाँ जा रहा होगा? इस चित्र में क्या बना हुआ है? मकान, सड़क बनी हुई है। अगले पेज पर कौन आ गया? कौन है ये– लड़की। इसमें लिखा है– साँप के सामने एक लड़की आ रही थी। अच्छा, अब साँप क्या करेगा? कुछ बच्चों ने कहा– लड़की को काटेगा। चलो, देखते हैं क्या हो रहा है? अब लिखा है– साँप ने सोचा, मेरे पास ज़हर है। तुमको पता है, साँप के पास ज़हर होता है। वह किसी को काट ले तो वह मर भी सकता है। लेकिन यह साँप क्या सोच रहा है? बच्चों के बीच चुप्पी छाई रही। उस लड़की को काटूँगा नहीं, अब क्या करेगा? काटेगा, या नहीं काटेगा? एक बच्चा– काट लेगा। दूसरा बच्चा– नहीं काटेगा। बाक़ी बच्चे चुप बैठे रहे। चलो, आगे देखते हैं। इसमें आगे लिखा है– साँप ने सोचा, वह लड़की मेरी तरफ़ आ रही है। और आगे लिखा है– तब तो इसे काटना ही पड़ेगा। अब देखते हैं क्या होता है? साँप क्या सोचता है? साँप सोचता है, अगर मैं इसे काटूँगा तो यह चिल्ला पड़ेगी। आवाज़ सुन लोग दौड़कर आ जाएँगे और मेरी जमकर पिटाई करेंगे। और आगे लिखा है– साँप सोच रहा है कि लड़की को काटेगा तो वह चिल्लाएगी और लोग आ जाएँगे व उसे मार डालेंगे। तब क्या होगा? अब साँप क्या भाग जाएगा? और आगे लिखा है– साँप दूसरा रास्ता पकड़कर खिसक लिया। इस तरह से साँप रास्ते से भाग गया। यह कहानी तुम लोगों को कैसी लगी? बच्चे चुप रहे। किताब में क्या-क्या था? बच्चों ने बताया– साँप, लड़की, पेड़, सड़क, झाड़ी आदि। तभी स्कूल में इंटरवल की घण्टी लगी और सभी बच्चे खाने के लिए कक्षा से चले गए।

बच्चों के साथ किताबों पर बातचीत के सन्दर्भ में सबसे पहली बात यह समझने की है कि इन बच्चों के साथ मेरा पहली बार संवाद हुआ। बच्चे बहुत खुलकर बात नहीं रख पा रहे थे। यह इस बात पर निर्भर करता है कि उनके

साथ इस तरह की बातचीत क्या पहले हुई है। परन्तु यह ज़रूर है कि वे अपनी बात रखने का प्रयास ज़रूर कर रहे हैं। साथ ही इस बातचीत में यह भी समझा जा सकता है कि शुरुआती कक्षाओं में बच्चों के साथ किताबों पर बातचीत कैसे करें। किस तरह बच्चों के अनुभवों को किताबों से जोड़ें, यह महत्त्वपूर्ण बात है। अकसर होता यह है कि हम बच्चों को किताब दिखाते ज़रूर हैं और वे देखते भी हैं, लेकिन बच्चों के साथ हम बहुत बातचीत नहीं करते। इस कारण बच्चे किताब को एक सीमित दायरे में ही समझ पाते हैं। बच्चों में समझ विकसित करने के लिए यह ज़रूरी है कि बच्चों को उनके अनुभवों को जोड़ने का मौक़ा दिया जाए जिससे उन्हें इस बात का अहसास हो कि वे जो सुन-पढ़ रहे हैं वह बात उनके आसपास की ही है। इसके साथ ही उन्हें लिखित भाषा का भी अहसास कराया जाए। इसके अन्तर्गत उन्हें यह अहसास हो कि जो सुनाया जा रहा है वह यहाँ लिखा हुआ है। इससे उन्हें पता चलता है कि किताब का नाम कहाँ पर लिखा है? लेखक का नाम कहाँ लिखा हुआ है? वे यह भी सोच पाएँ कि किताब के मुखपृष्ठ पर जो चित्र बना है उससे सम्बन्धित कहानी ही आगे दी गई है। साथ ही उनसे चित्रों पर भी बात करनी चाहिए। बातचीत के दौरान उनसे इस तरह के सवाल पूछे जाएँ जो उन्हें आगे अनुमान लगाने का मौक़ा देते हों। इस प्रक्रिया में चित्र भी काफ़ी मदद करते हैं। यह पढ़ना सीखने की प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। इसके साथ हम यह भी ध्यान दे सकते हैं कि बच्चों के उत्तरों को सही या ग़लत के खाने में न बाँटें। सही की दिशा में कुछ संकेत अवश्य दिए जा सकते हैं। यहाँ हमें समझना होगा कि बच्चे पढ़ना सीख रहे हैं, उन्हें अपनी बात रखना ज़रूरी है। इस कारण ज़रूरी यह है कि वह अपने अनुभवों को जोड़ें और किताब को समझने का प्रयास करें। उनका बोलना इसलिए भी ज़रूरी है कि उससे मौखिक अभिव्यक्ति व कल्पनाशक्ति का विकास भी होता है। अन्त में, सबसे महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के लिए सुरुचिपूर्ण सामग्री होनी चाहिए और बच्चों के साथ शुरुआत से ही उसका उपयोग होना चाहिए तभी वे एक पाठक के रूप में विकसित हो पाएँगे।

कमलेश चन्द्र जोशी प्राथमिक शिक्षा से लम्बे समय से जुड़े हुए हैं। प्राथमिक शिक्षा से जुड़े विभिन्न विषयों– शिक्षक शिक्षा, बाल साहित्य, प्रारम्भिक भाषा एवं साक्षरता आदि में गहरी रुचि। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ऊधम सिंह नगर में कार्यरत।
सम्पर्क : kamlesh@azimpremjifoundation.org